"काया सराय में जीव मुसाफ़िर कहाँ करत उन्माद रे"

(सत्संदेश दिसम्बर 1971 में प्रकाशित प्रवचन)

इंसान का ये जिस्म जो हम लिये फिरते हैं, ये एक अजीबो-गरीब (विलक्षण) मकान है, a wonderful house we live in, हम ने इस को खोजा नहीं। बाहर मुखी सारी उम्र खोजते रहे, ज़िंदगी का राज़ (रहस्य) हल न हो सका। देखने को ये जिस्म क्या नज़र आता है? मिट्टी का पुतला, पांच छः फुट का। जो इस को चला रहा है, जो ताकत, वह भी इस में कुछ मुद्दत तक कैद है कैद। देखिये ये जिस्म है। इस में नौ सुराख (छेद) हैं- दो आंखे, दो कान, दो नासिका, मुंह, गुदा और इंद्री। इस में जो चलाने वाला है वह बाहर क्यों नहीं निकल जाता? प्राण, स्वास, चलता है, बाहर आता है, अंतर में न आए! कोई चीज़ इस को कंट्रोल (नियंत्रित) कर रही है ना! एक आदमी को दस बीस गोलियां लगती हैं, नहीं मरता। एक पांव फिसलने से मर जाता है। तो इस जिस्म को चलाने वाली जो शक्ति है ना, उस तरफ हम ने तवज्जो नहीं दी। और जिस आधार पर वह शक्ति इस जिस्म के साथ कायम है, उस का ख्याल ही नहीं। इस लिये महापुरुषों ने कहा कि जो हक़ (प्रभु) से मुनकिर (नास्तिक) हैं,- "मुनकिरे हक़ नज्दे मिल्लत काफ़र अस्त।" अर्थात् हक़ से, परमात्मा से जो मुनकिर हैं (उस को नहीं मानते) वह मुल्लाओं के नज़दीक, पंडितों के नज़दीक काफिर (नास्तिक) हैं। मगर जो, "मुनकिर जे खुद" हैं वे, "नज्दे मन काफ़र तर अस्त," वे उस से भी ज्यादा काफ़र है। परमात्मा

से तो, मुआफ़ करना, हम सभी काफ़र हैं बल्कि उस से पहले हम अपने आप से मुनकिर हैं। हमें यह नहीं पता कि हम कौन हैं? छोटे बच्चे से पूछो, तुम कौन हो? वह आंखें फाड़ता है, मुंह खोलता है। उस को अभी कुछ होश बाकी है। जैसे-जैसे बड़ा होता है, इस जिस्म का इतना रूप बन जाता है कि उस से पूछो, तुम कौन हो? कहता है मैं राम दास हूं, मैं राम सिंह हूँ। यानी वह differentiate (भेद) नहीं कर सकता कि मैं कौन हूं?

अब देखने वाली बात ये है कि ये शरीर है। हम कहते हैं, ये मेरी पगड़ी है, ये मेरा कोट है, ये मेरी कमीज़ है। हम इन को उतार कर रख सकते हैं। हम ये भी कहते हैं ये मेरा शरीर है, मेरा जिस्म है। कभी उतारा है? कहने को तो हम कहते हैं, ये मेरा जिस्म है। मगर "मैं" जिस्म बन रहा है। मेरे का पता नहीं, मेरा कहने वाला कौन है। तो यह, जो परमात्मा से मुनकिर (इंकारी) है उस से बदतर हुए कि नहीं? आप बताओ। और परमात्मा कहो, Overself कहो, उस का अनुभव किस ने करना है? हमारे अपने आप ने, जिस को हम आत्मा कहते हैं। वह चेतन स्वरूप है, Conscious entity है। उसी से ये जिस्म जीवंत हो रहा है, enliven हो रहा है। और जिस के सबब से ये जीवंत हो रहा है, वह भी किसी आधार पर इस जिस्म के साथ कायम है। जब तक इस को अपने आप की होश न आए कि मैं कौन हूं, तब तक Overself (परमात्मा) का क्या पता? तो सच्चे मानों में दुनिया में आस्तिक बहुत कम लोग हैं। आस्तिक वही है जिन्होंने उस का अनुभव किया है, जिन्होंने अपने आप को जाना है। अपने आप को कैसे उन्होंने जाना है? बुद्धि के बल पर तो सारा जहान कहता है, "मैं इंद्रे नहीं, मैं मन नहीं, मैं बुद्धि नहीं, मैं प्राण नहीं" अरे भई कभी अलैहदा कर के भी देखा है? जैसे पगड़ी को किनारे रख देते हैं या टोपी को, क्या इस जिस्म को भी किनारे रख कर देखा है कि हम इस के मकीन (निवासी) कौन हैं?

तो अनुभवी पुरुष कहते हैं, अरे भई सब से बड़ी किताब यही इंसानी जिस्म

है जिस से सब वेद-शास्त्र, ग्रंथ पोथियां आई। ऋषि, मुनि, महात्मा जिन्होंने इस जिस्म को, काया को खोजा है, उन्होंने इस हकीकत को पाया है कि इस को चलाने वाली कोई शक्ति है जो हमारा अपना आप है। और वह भी किसी और जीवन के आधार पर चल रहा है। तो वह लोग क्या कहते हैं कि सब ग्रंथ पोथियां, वेद शास्त्र कहां से आए? इंसान से। कैसे इंसानों से? जो अंतर में intune (अंतर्मुख) हुए, जिन्होंने अंतर में अपने आप को analyse किया (जड़-चेतन को अलग करके खोजा। जिस्म और मन-इंद्रियों से, बुद्धि से, जिस्म-जिस्मानियत से ऊपर आए) rise above body-consciousness किया (पिंड से ऊपर आए) वह higher touch में (ऊपर दिव्य मंडलों में) आए, mouth piece (प्रभु का मुख) बने। जो कहा, क्या कहा? जो उस की (प्रभु की) तरफ से आया। वे मन-इंद्रियों के घाट से नहीं बोलते। ये फर्क है। एक अनुभवी पुरुष की talk (प्रवचन) में और एक आलिम-फ़ाजिल (विद्वान) की टाक में यही फर्क है कि वह (विद्वान) मन-बुद्धि के घाट पर बोलता है और वह (अनुभवी पुरुष) as it comes (जैसी अंतर में धारा आ रही है) इमरसन कहता है कि जो विचार बिना सोचे-समझे के इंसान के अंतर में आते हैं, they are always perfect (वह सही होते हैं)। तो इस लिये एक फकीर ने कहाः-

दर हक़ीक़त खुद तुई उम उल किताब।

कि हकीकत (वास्तव) में तू सब किताबों की मां है। आगे कहते हैं, "खुद ज़ेखुद आयाते हक़ रा बादे हक़," कि तू अपने आप से आप में हो, और देख, अंतर में वह आयते आ रही हैं। वह प्रभु तुझ में बोल रहा है। जिन्होंने अनुभव किया है वे यही कहते हैं,- "जैसे में आवे ख़सम की वाणी, तैसड़ा करि ज्ञान वे लालो।" गुरु नानक साहब फरमाते हैं कि जिस तरह मालिक मुझ से कहलवाता है मैं कहता हूं, मैं सोच-समझ कर नहीं कहता। यही क्राईस्ट ने कहा कि वह पिता मुझ में बैठ कर काम कर रहा है। मैं जो कहता हूं वही कह रहा है।

एक बार लोगों ने उन से सवाल किया कि महाराज ! आप हमेशा अपने पिता का ज़िक्र करते हो। क्या अच्छा होता किसी दिन हम को अपने पिता के दर्शन भी करा देते। कहते हैं, वह थोड़ा जोश में आए- He grew indignant over it. और फरमाया, अफसोस। मैं इतनी मुद्दत तुम्हारे दरम्यान रहा और तुम ये न जान सके कि मुझ में मेरा पिता ही बैठ कर काम कर रहा था। जिस ने मुझ को देखा उस ने मेरे पिता को देखा। बड़ी साफ़गोई है। एक रेडियो सेट बन गया। जो उस में आता है, सुनो। रेडियो सेट बना कर फिर सुनना कुछ और है, रेडियो सेट के पास आ कर बैठ जाना कुछ और है। रेडियो सेट कहां से catch (पकड़ता) करता है (आवाज़)? जिस में वह intune (जुड़ा) है। तो अनुभवी पुरुष प्रभु से intune है। उस में वह प्रभु बोलता है।

ब्रह्म बोले काया के ओहले, काया बिन ब्रह्म क्या बोले॥

हरेक इंसान के अंतर में वह divine link (दिव्य सूत्र) मौजूद है। ये न कहो किसी में ज़्यादा है। है सब में। फर्क यही है कि जिन्होंने उस का अनुभव किया है, जो उस के mouth piece बने, वह देख रहे हैं, I and my Father are one (मैं और मेरा पिता एक है) "पिता पूत एके रंग लीने।" वे उस का अनुभव कर रहे हैं। कैसे? बाहर से हट कर। मन-इंद्रियों के इंद्रजाल से ऊपर आ कर उस का अनुभव किया, फिर देखते हैं, मेरा जीवन आधार है वह (प्रभु)। ग्रंथों-पोथियों में उस का ज़िक्र है ज़िक्र। दो किस्म की विद्यायें हैं। भारद्वाज ऋषि के पास शोनक नाम का एक गृहस्थी थे, गये। सवाल किया, महराज, वह कौन-सी चीज़ है जिस के जानने से सब कुछ जाना हुआ हो जाता है? देखा, यह गृहस्थी है। आज कल के गृहस्थी और उस जमाने के गृहस्थी में बड़ा भारी फर्क है। उस जमाने में गृहस्थ आश्रम में वे लोग आते थे जो 25 वर्ष का ब्रह्मचर्य धारण कर के वेदों-शास्त्रों के ज्ञाता हो कर आते थे। तो गृहस्थ आश्रम शास्त्र मर्यादा के अनुसार गुजार कर फिर वाणप्रस्थ आश्रम में दाखिल होते थे। आज तो बिजनेस बन गई। दो चार किताबे याद की, लैक्चर देने

लग गये। ग्रंथाकार भी बन गये, लैक्चर भी दिये, मगर अपनी तरफ तवज्जो नहीं दी। वह क्या कहें? वह देखता ही नहीं (उस हकीकत को)?

कबीर साहब थे। एक पंडित से बातचीत की। तो कहने लगे, अरे भई, "तेरा मेरा मनुवा कैसे इक होई रे।" अरे भई तेरा और मेरा मन कैसे मुत्तफिक (सहमत) हो सकता है? "मैं कहता हूं आंखन देखी, तू कहता कागद की लेखी।" तू काग़जों का पढ़ा-पढ़ाया बयान कर रहा है, मैं देख कर बयान कर रहा हूं। देखे बयान में कुछ और अंदाज होता है। पढ़े-पढ़ाये बयान में अपनी conviction (विश्वास) नहीं। तो अनुभवी पुरुष और एक आम इंसान में फर्क यही है कि वह (अनुभवी पुरुष) intune हो चुका है (जुड़ा है परम् तत्व से)। परमात्मा ने सब को एक जैसे हकूक (समान अधिकार) दिये हैं। उस ने तो आत्मा देहधारी बनाये भई। और आत्मा की जात वही है जो परमात्मा की जात है। यह (आत्मा) चेतन स्वरूप है। परमात्मा महाचेतन प्रभु है, All Consciousness (महाचेतनता) का समुद्र है। हम जाते-हक (परमात्मा) के क़तरे (बिंदु) हैं समझ लो। यह (आत्मा) भी चेतन स्वरूप है मगर यह मन के अधीन है। मन को आगे इंद्रियां खींच रही हैं, इंद्रियों को भोग खींच रहे हैं। यह (जीव) जिस्म का और जगत का रूप बना बैठा है। इतना इन से identify (लम्पट) हो चुका है कि अपने आप को भूल गया, प्रभु को भूल गया। जिस को अपने आपे की खबर नहीं, प्रभु का सवाल ही कहां है? तो इस लिये महापुरुषों ने इस बात पर ज़ोर दिया, अपने आप को जानो। परमात्मा का नहीं कहा भई। पहले कहा, अपने आप को जानो, Know thyself.

कहु नानक बिन आपा चीन्हे मिटे न भ्रम की काई॥

जब तक तुम अपने आप को चीन्हते नहीं, analyse कर के, मन-इंद्रियों से आज़ाद कर के rise above body-consciousness कर के (देहध्यास से ऊपर आ कर) अपने आपे का अनुभव नहीं होता कि who are you, what you are? (तुम कौन हो, क्या हो?) तब तक प्रभु का अनुभव नहीं होता।

और वैसे भी, आत्मा का साक्षात्कार कब होता है? सब महापुरुष कहते हैं, "इंद्रियां दमन हों, मन खड़ा हो और बुद्धि भी स्थिर हो, तब आत्मा का साक्षात्कार होता है।" आत्मा ने प्रभु का अनुभव करना है। "न वह इंद्रियों से जाना जाता है, न मन से, न बुद्धि से, न प्राणों से।" बड़ी clear-cut (स्पष्ट) बात पेश की है। तो पहला सवाल है, प्रभु को जानने से पहले अपने आप को जनना है। इल्म (विद्या) जो है, वह इब्तुल किताब है, वह किताबों का बच्चा है। इश्क (प्रेम) जो है वह उमुल किताब है, वह किताबों की मां (जननी) है। परमात्मा प्रेम है ना। आत्मा उस की अंश है। यह भी प्रेम का स्वरूप है। प्रेम हमारे लोगों का क्या बन रहा है? इंद्रियों के घाट पर बाहर उस के कितने रूप हैं- सैकड़ों, हज़ारों।

एक दिल लाखों तमन्ना उस पे और ज्यादा हबस।

फिर ठिकाना है कहां उस के बिठाने के लिये॥

अगर उस को सब तरफ से हटा कर वह एक जगह लग जाए- एक नाली जा रही है। उस में सुराख है, नौ या दस। एक बंद है, नौ खुले हैं। पानी इन से एक-एक कतरा कर के बाहर गिरता है। अगर नौ सुराखों को बंद कर दो, दसवीं गली को धार मार कर पानी मिलेगा। तो हमारी आत्मा अभी तक मन के आधीन हो रही है। अगर यह बाहर से हट जाए, इस में बड़ी भारी ताकत है। परमात्मा महान सुरति है। हमारी आत्मा सुरति है, attention कह दो। जब उस महान सुरति को ख्याल हुआ, मैं एक से अनेक हो जाऊं (एको अहं बहु स्याम्) यह दुनिया बन गई। "कुन फियुकुन" अर्थात् हो, बस हो गया। "एको कवाओ तिसते होए लख दरियाओ।" उस महान सुरति के एक कहने से, ख्याल के उभार से दुनिया into creation (अस्तित्व में) आ गई। हमारी आत्मा भी तो उसी की अंश है। यह भी बड़ी भारी बलवान है मगर मन और इंद्रियों के घाट पर फैलाव के कारण यह निर्बल और कमजोर हो गई। अगर यह बाहर से हट जाए, एक नई दुनिया खड़ी कर सकती है। यह मुबालिग़ा (अतिश्योक्ति)

नहीं मगर अफ़सोस है कि इस के टुकड़े हुए पड़े हैं। "एक दिल लाखों तमन्ना उस पे और ज्यादा हवस। फिर ठिकाना है कहां उस के बिठाने के लिये।" तो महापुरुष क्या कहते हैं, प्रभु कैसे मिल सकता है? बड़ी simple (सीधी) बात हैः-

साईं दा की पावणा, इधरों पट्टणा ते उधर लावणा॥

बाहर से हटने का सवाल है। फैलाव से हट जाओ। सूरज की किरणें आप को जलाती नहीं। अगर Convex (मोटे शीशे) से गुज़ारोगे आग लग जाती है। सारा खेल यकसूई (एकाग्रता) का है, बाहर से हटने का है, Concentration का है। तुम में बड़ी भारी ताकत है। तुम शेर के बच्चे हो यह कहो, मगर निर्बल और कमज़ोर हो रहे हो इंद्रियों के घाट पर। महापुरुष यही मज़मून पेश करते रहे। तो भारद्वाज ऋषि ने कहा कि यह (शोनक गृहस्थी जिस ने पूछा था कि वह कौन सी चीज़ है जिस के जानने से सब कुछ जाना हुआ हो जाता है) पढ़ा लिखा, आलिम-फ़ाज़िल आदमी है, इस को इस तरीके से समझाया जाए कि जो कुछ यह करता है वह भी उस में आ जाए और जो मैं बताना चाहता हूं वह भी आ जाए। तो उन्होंने कहा, दो प्रकार की विद्यायें हैं। एक अपरा विद्या, दूसरी पराविद्या। अपराविद्या की तारीफ (परिभाषा) की, ग्रंथों-पोथियों का पढ़ना - पढ़ने से शौक बनेगा ना। महापुरुषों ने इसी मज़मून को बार-बार खोल-खोल कर समझाया है (ग्रंथों में) कई पहलुओं (पक्षों) से। पढ़ने से शौक बनेगा, रुचि बनेगी। भाव भक्ति पैदा करने के लिये रस्म-रिवाज़, तीर्थ यात्रा, हवन-दान, यह-वह करने से भाव भक्ति बनेगी। ज़मीन की तैयारी हो गई इस में संतुष्टि नहीं, मुक्ति नहीं। ये अच्छे कर्म हैं, स्वर्ग मिलेगा, वैकुंठ मिलेगा, बार-बार आना पड़ेगा क्योंकि इंद्रियों के घाट पर ही रहे। "इंद्रियां दमन हों, मन खड़ा हो, बुद्धि भी स्थिर हो तब आत्मा का साक्षात्कार होता है।"

अब आप देखिये इन की क्या Value (मूल्य) है (अपराविद्या के साधनों और विभिन्न समाजों के रस्म-रिवाज़ का)। ये पहला कदम है। बच्चा स्कूल

जा रहा है, कच्ची कलम लिये फिरता है। ठीक है। सारी उम्र तख्ती, कलम, दवात थोड़े लिये फिरता है? ये elementary steps (शुरु के कदम) हैं। पहला कदम आप भाइयों ने उठाया, ठीक है। उस से आगे बढ़ो। उस से फायदा उठाओ। वह यही है कि आप को ग्रंथों-पोथियों के पढ़ने से महापुरुषों की, चाहे वे किसी ज़माने में आए, रुचि और शौक बनेगा। दूसरा, भाव भक्ति पैदा करने के लिये पूजा-पाठ, यह वह बनाए गए। ज़मीन की तैयारी हुई, मगर जब तक आप उस को नहीं जानते- वह कौन ? वह परा है। परा किस को कहते हैं? आत्मा, जो मन इंद्रियों के घाट के अधीन है, जिस्म और जगत का रूप बनी बैठी है। अरे भई इस को उधर से हटाओ, अपने आप की होश आए, Overself (प्रभु) से contact हो। (उस से जुड़े) उस को जान कर फिर सब कुछ जाना हुआ हो जाता है। ये बात समझाई (भारद्वाज ऋषि ने)। आप देखिये ये उपदेश किन लोगों के लिए है? सब मुतलाशियाने हक़ (जिज्ञासुओं)के लिए जो प्रभु को पाना चाहते हैं।

परमात्मा ने याद रखो, इंसान बनाए है। परमात्मा ने मुहरें लगा कर नहीं भेजा अरे भई तुम कौन हो (हिन्दू हो, मुसलमान हो, सिख हो, ईसाई हो)। ये स्कूल और कालेज हैं (विभिन्न-समाजें) जिन में हम दाखिल हुए थे प्रभु को पाने के लिए। मुबारिक है हरेक समाज जिस में आप दाखिल हुए हो, मगर जिस गर्ज के लिए दाखिल हुए हो (किसी समाज में) उस गर्ज को पाओ। गर्ज क्या थी? प्रभु को पाना। और गर्ज क्या थी कि मनुष्य जीवन की यात्रा सुख से व्यतीत हो, इंसान-इंसान के काम आए। ये दो आदर्श थे हरेक स्कूल और कालेज (समाज) के सामने। नतीजा क्या हुआ? "चाले थे हरि मिलन को बीच ही अटकेयो चीत।" गर्ज तो थी, प्रभु को पाना। उस को पाने के पहले अपने आप को पाना था। आप कहेंगे क्या हम अपने आप को गुम कर चुके हैं? वाकई (निस्संदेह)।

हरचे मा करदेम बरखुद हेच नाबीना न कर्द।

कि जो कुछ हम ने अपने आप के साथ जुल्म किया है, किसी अंधे से अंधे इंसान ने न किया होगा। कहते हैं, वह क्या जुल्म है? "गुम करदेम दरीं ख़ाना साहिबें ख़ाना रा।" इस घर में घर के चलाने वाले को गुम कर दिया। जिस्म का रूप जो बन जाए। तो महापुरुष हमेशा यही कहते हैं कि वह चीज़ पहले तुम जानो। वह तुम्हारा जीवनाधार है। जब तक आप इधर से, बाहर फैलाव से हटते नहीं, चीज़ तुम में है, ग्रंथों-पोथियों में उस का ज़िक्र है- बाक़ी पूजा-पाठ वगैरह, ये भाव भक्ति के पैदा करने के लिये बनाए गए। इन से काम ले लो। मगर जब तक तुम अपनी आत्मा को मन इंद्रियों के इंद्रजाल से छुड़ाते नहीं, अपने आप की होश तुम को आती नहीं, तब तक हक़ीक़त को पा नहीं सकते हैं, mystery of life (जीवन रहस्य) को हल कर सकते हैं चाहे किसी समाज में है, मुबारिक है। और हरेक समाज में महापुरुष आए जिन्होंने उस को (जीवन रहस्य को) हल किया है। और जो जो उन के contact (संपर्क) में आए वे भी हल कर गए। रविदास जी चमार थे। कबीर साहब जुलाहे थे। तुलसी साहब ब्राह्मण थे। गुरु साहिबान खत्री थे। अरे भई खत्री, ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र तो हम लोगों ने बनाए। परमात्मा ने तो आत्मा देहधारी बनाए। जब अपनी आत्मा इंद्रियों के घाट से ऊपर आ जाए तुम बताओ तुम कौन हो? तो किसी महापुरुष की बाणी आप लेंगे यही मज़मून पेश करते हैं। तरज़े-बयान (वर्णन शैली) अपना रहा, जबानदानी अपनी रही, नफ़से मज़मून (अर्थात् बात) वही है। तो जब भी महापुरुष आते हैं उन का पहला नज़रिया (मत) क्या होगा? वे आप को समाजों के लेबलों से नहीं देखते कि किस समाज का लेबल आप लगाए बैठे हो। वे देखते हैं तुम सब आत्मा देहधारी हो। वे आत्मा के level (स्तर) से देखते हैं। वे समाजों के गुरु नहीं, वे जगत गुरु हैं।

सत्गुर ऐसा जाणिए जो सब से लए मिलाय जीयो।

सत्स्वरूप उस हस्ती का नाम है जो सब को मिला कर बैठता है। वहां कौमों-मज़हबों का कोई झगड़ा नहीं, न किसी समाज को वे तोड़ते हैं न नई

बनाते हैं। वे कहते हैं समाजें आगे ही बहुत हैं। हमारे हजूर (श्री हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज) फरमाया करते थे, कुंए आगे ही बहुत लगे पड़े हैं और नया कुंआ लगाने की क्या ज़रूरत है? समाज में रहो या नई खड़ा करो। अरे भई क्या ये बेहतर नहीं नई (समाज) बनाने से कि जिस में हो उसी (समाज) में रहो। उस में जो Corruption (भ्रष्टाचार) है, उस को छोड़ दो। जाओ किसी ऐसे पुरुष के पास जिस ने इस मुइम्मे (जीवन रहस्य) को हल किया है। उस का नाम कुछ रख लो। डाक्टर बनना है तो डाक्टर के पास जाओ, इंजीनियर बनना है तो इंजीनियर के पास जाओ। आलिम (विद्वान) बनना है तो किसी आलिम के पास जाओ और आत्म बोध को पाना है तो जाओ आत्म तत्व दर्शियों के पास। बड़ी मोटी बात, कामनसेंस की बात। वे क्या कहते हैं? वे यही कहते हैं, अरे भई तुम आत्मा हो, आत्मा। तुम आत्मा हो, देहधारी। चंद रोज़ा ये मकान (देह का) तुम को मिला है, बरतने के लिये, to make the best use of it इंसानी जामा आप को पता है, ये माना गया है कि चौरासी लाख जियाजून (योनियों) की यह सरदार जून है। Highest rung of the ladder इस में रहते हुए आप एक ऐसा काम कर सकते हो जो किसी और जूनी में नहीं कर सकते और वह क्या है कि तुम्हारे अंतर में प्रभु ने आकाश तत्व प्रबल रखा है जिस के सबब से तुम को विवेक है। तुम सत और असत का निर्णय कर सकते हो, सत को ग्रहण कर के असत से मुंह मोड़ सकते हो। यही वेद भगवान में प्रार्थना आती है, "हे प्रभो! हमें असत से सत की तरफ ले चल।" जब सत-असत का निर्णय ही न हो, फिर । सवाल ही कहां आता है? यही स्वामी जी महाराज ने फर्मायाः-

हंसनी छानो दूध और पानी।

तुम हंसनी हो ऐ सुरत। हंसनी के बारे में कहा जाता है कि उस की चोंच में यह तासीर है, पानी और दूध मिला हो, पानी अलैहदा और दूध अलैहदा हो जाता है। कि ऐ आत्मा तू हंसनी है, सत और असत का निर्णय कर, दूध

को पी और पानी को छोड़ दे। "साधो एह तन मिथ्या जानो। या भीतर जो राम बसत है, साचा ताहि पहचानो।" ये तन और इस के ताल्लुकात, ये बदल रहे हैं। Matter is changing (माद्दा बदल रहा है)। तो सब महापुरुषों ने यही उपदेश दिया है। मोमिन और काफर कहो, मनसुख और गुरुमुख कहो, उस में फर्क क्या है?

काफिर की ये पहचान के आफ़ाक़ में गुम है।

मोमिन की ये पहचान के गुम उसमें हैं आफ़ाक़।

वह दुनिया में गुम हो गया। काफर की यही पहचान है, मनसुख की। वह, मन-इंद्रियों को घाट की जो दुनिया रची पड़ी है, इसी में गुम हो चुका है। और, "मोमिन की ये पहचान के गुम उस में हैं आफ़ाक़।" उस की दुनिया हवन हो गई। बस। अपने आपे में जाग उठा, प्रभु के नशे को पा कर दुनिया-माफ़ीहा (लोक-परलोक) को भूल गया। तो महापुरुष क्या कहते हैं, अरे भई, "जो ब्रह्मांडे सोई पिंडे जो खोजे सो पावे।" Great is man (मनुष्य महान है) उस को (मानव को) मामूली न समझो, पांच छह फुट के पुतले को। ये तन बड़ी किस्मत से तुम को मिला है। देवी-देवता भी अगर मुक्ति को पाना चाहें तो मनुष्य जीवन धारण करना होगा। समझे? ये नौ द्वारों वाला मकान तुम को मिला है चंद रोजा (चार दिन) रहने को। अगर तुम अपनी आत्मा को, सब महापुरुषों की वाणी यही कहती है कि आत्मा मन के अधिन है, मन-इंद्रियों के अधीन है, इंद्रियों को भोग खींच रहे हैं। उपनिषद क्या कहते हैं?

"शरीर रूपी रथ पर आत्मा सवार है। बुद्धि उस की रथवान है, मन लगाम है और इंद्रे रूपी घोड़े इस को भोगों-रसों के खेतों में खींच रहे हैं।"

अगर हम आत्मा को मन या नफ़स या इंद्रियों के भोगो-रसों से हटा लें, अपने आप को जान लें, प्रभु को पा लें। बस। यही एक रुकावट है इस के

अंतर। बाहर से हटने का सवाल है। "साईं दा की पावणा, इधरों पट्टणा ते उधर लावणा।" तो किसी महापुरुष की वाणी ले लो, यही तालीम पेश करते हैं। किन के लिए है (ये उपदेश)? As a man problem (ये मानव समस्या है मनुष्य मात्र के लिए) सब के लिये है वह किसी भी समाज में हैं। सब समाजें मुबारिक हैं। किसी समाज में ज़रूर रहना है। इंसान social being (सामाजिक प्राणी) है। मगर जिस गर्ज़ के लिये शामिल हुए (किसी समाज में) अगर उस गर्ज़ को नहीं पाया तो जीवन बर्बाद चला गया, चाहे किसी समाज में हो। ज़ोरास्टर (जरथुस्त) से पूछा गया कि महाराज हम क्या करें? तो फ़रमाने लगे, You join the Army of God कि परमात्मा की फौज में तुम दाखिल हो जाओ। क्या qualification (योग्यता) चाहिये? कहने लगे good thoughts, good words, and good deeds (शुभ विचार, शुभ वचन और शुभ कर्म), righteousness (नेकी)। सारे महापुरुषों ने यही कहा है, सदाचारी बनो, इंद्रियों के भोगों-रसों से हटो, प्रभु को पाओ। क्राईस्ट से ये सवाल पूछा गया कि यहां का बादशाह हम से खिराज़ (टैक्स) मांगता है, हम दें या न दें? उन्होंने कहा, एक सिक्का ले आओ। सिक्का ले आए। उस पर बादशाह की मोहर थी, सीज़र बादशाह था उस जमाने में। तो कहने लगे, give unto Ceaser things that are Ceasar's जिस पर सीज़र बादशाह की मोहर है वह उस के हवाले करो। तुम्हारी आत्मा पर प्रभु की मोहर है, उस के हवाले करो।

सर्व धर्म में श्रेष्ठ धर्म, हर को नाम जप निर्मल कर्म॥

सब धर्मों में श्रेष्ठ धर्म क्या है? "हर को नाम जप निर्मल कर्म।" नेक-पाक सदाचारी बनो, इंसान इंसान के काम आए। "नाम जपो और बंड छको।" ये कहा सिख धर्म में। ये तालीम महापुरुषों की हमेशा से रही है, किसी भी समाज में वे आए हों। हम क्या करते हैं? दाखिल तो होना चाहते हैं प्रभु की फौज में, समाजों की फौज में दाखिल हो गए, आपस में लड़ रहे हैं। किनारे रह गया प्रभु। वह कहता है मैं हिंदू हूं, वह कहता है मैं सिख हूं, मैं मुसलमान

हूं, आपस में लड़ रहे हैं। कबीर साहब से पूछा गया तुम कौन हो? कहते हैं, "न कोई हिंदू न मुसलमान। हम दोनों को एको जान।" हिंदू मुसलमान भई हमने मोहर लगाई है, जिस्म पर लेबल हैं जो लगे हैं। किस लिए लगाए गए? कालेजों के अपने-अपने लेबल होते हैं कि नहीं? वह लगाए बैठे हैं, और क्या है? अरे परमात्मा ने तो इंसान बनाए। Man is oldest (मानव प्राचीतम) है। समाजें हम लोगों ने बनाईं, आत्मोन्नति के लिए। अगर ये गर्ज़ पूरी नहीं हो रही फिर क्या है? महापुरुष जब आते हैं ना, मैं तो यही अर्ज़ करूँगा कि समाज गुरु जो ठीक प्रचार करें, दुनिया में सुख हो जाए। क्यों भई? इस लिये, समाजों में दाख़िल होने की ग़र्ज है, दुनिया की यात्रा सुख से व्यतीत हो, इंसान इंसान के काम आए और प्रभु को पाए। यही है ना। अगर यही आदर्श हो, जब सब हम एक ही के पुजारी हैं तो झगड़े काहे के हैं?

सैकड़ों आशक है दिलाराम सब का एक है।

मजहबो-मिल्लत जुदा है काम सब का एक है।।

ग़लत प्रचार के सबब से भाई भाई के प्याले जुदा हो गए। वह कहते हैं हमारी समाज अच्छी है वह कहते हैं हमारी- अरे भई समाजें तो सब एक ही हैं। "वेद-कतेब कहो मत झूठे, झूठा सो जो न विचारे।" ग्रंथों-पोथियों में अनुभवी लोगों के कलाम हैं जिन्होंने उस तरफ कदम उठाया है। जितना-जितना उठाया है उतना-उतना बयान कर गए। हमारे दिल में सब के लिए इज्ज़त है। अब आप देखेंगे संतों का नज़रिया (दृष्टिकोण) क्या है? वह न सामाजिक है न पोलिटिकल है भई। वह तो Cosmic (व्यापक) है। Peace be unto all under thy will O Lord. "नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाणे सरबत्त का भला।" इतना उन का विशाल हृदय होता है कि सब उस में आ जाते हैं। ऐसे पुरुष जब आते हैं, सब के लिए आते हैं। सब समाजें उन की अपनी हैं, सब कौमें सब मुल्क उन के अपने हैं। मैं West (पश्चिम) में गया। वहां उन्होंने

एक मीटिंग रखी। East (पूर्व) की तरफ से मुझे चुना कि He will represent East (ये पूर्व का प्रतिनिधित्व करेंगे)। West (पश्चिम) की तरफ से फ्रांस से एक आदमी ने आना था। जिस दिन मीटिंग थी वह फ्रांस वाला आदमी नहीं पहुँचा। तो वे कहने लगे, Now we leave both East and West to you (कि पूर्व पश्चिम दोनों का प्रतिनिधित्व तुम्हीं करो)।

मैंने उन से कहा, इस में शक नहीं ये कहा गया है, East is for East and West is for West and the two shall not meet अर्थात् पूर्व पूर्व के लिये है पश्चिम पश्चिम वालों के लिए और दोनों कभी आपस में नहीं मिल सकेंगे। मैंने कहा ये किसी इंसान ने कहा है, परमात्मा ने नहीं। The whole Creation is house of God, there is no East or West (ये सारी दुनिया ही प्रभु का घर है, इस में कोई पूर्व है न पश्चिम)। और जितने ये मुल्क हैं, They are the so many rooms in the House of our Father (ये विभिन्न देश विश्व के जो है ये उस परम् पिता के घर के कई कमरे हैं)। हवाई जहाजों ने distances (फ़ासलों) को eliminate (समाप्त) कर दिया है, आज यहां, कल इंगलैंड, परसो अमेरिका पहुंच जाओ। इंसान इंसान हैं सब, कहीं भी वह हों। हां जिस्म के पहरावे अलैहदा अलैहदा हैं, रस्म-रिवाज अलग-अलग हैं और सब एक ही के पुजारी हैं, झगड़ा काहे का? तो अनुभवी पुरुषों का हमेशा से यही नज़रिया (दृष्टिकोण) रहा है। मुझे वहां कहा गया (अमेरिका में) Are you out to make some Ashram over here? क्या तुम यहां कोई आश्रम बनाना चाहते हो? मैंने कहा, नहीं। तो फिर किस लिए यहां आए हो? मैंने उन को कहा, I have come only to raise up these very Ashrams you are carrying (यही मानव तन का आश्रम जो तुम लिए फिरते हो उसी को ऊपर उठाने मैं आया हूं) तुम उस को भूल चुके हो। मैं awakening (जागृति) देने आया हूं। चीज़ आगे ही मौजूद है, मैंने कोई नई चीज़ नहीं देनी। जिस को तुम भूल चुके हो उस को ताज़ा करने आया हूं।

तो मेरे अर्ज़ करने का मतलब क्या है कि संतों का नज़रिया (दृष्टिकोण) अनुभवी पुरुषों का नज़रिया तो यही है। जो सामाजिक तंगदिल दायरे (संकीर्ण दृष्टि के लोग) में हैं, सही प्रचार नहीं करते, उसी का ये नतीजा (परिणाम) है। पाकिस्तान क्यों बना? गलत प्रचार के सबब से। हमारे हजूर (श्री हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज) थे। पाकिस्तान अभी नहीं बना था (उन दिनों की ये घटना है)। हिंदू-मुस्लिम फिसाद (दंगा) हुआ वहां (मुलतान में)। हमारे हजूर वहां गए तो वह कहने लगे, अगर आप पहले आ जाते तो हिन्दू-मुस्लिम फसाद न होता। तो मैं यही अर्ज़ करता हूं कि बात बड़ी simple (सीधी) और साफ है। मगर पेट प्रचार ने, माफ़ करना, हरेक समाज में अधोगति फैला रखी है। अगर चार शराबी, वे किसी समाज के हो, गले लग कर बैठ सकते हैं, चार प्रभु भक्त हरेक समाज के क्यों गले लग कर नहीं बैठ सकते? तो कहना पड़ेगा ना, कि उन को नशा है, इन को नशा नहीं आया। बात तो यही है। तो ऐसे लोग क्या करते हैं? कबीर साहब ने एक जगह कहा कि एक हंस था। वह एक खेत पर आ बैठा जिस में कोदरे का अनाज था (कोदरा बड़ा मामूली दर्जे का अनाज माना जाता है)। तो जमींदार डंडा लेकर आ गया, उठ जाओ भई यहाँ से। यहा मत बैठो। तो कहने लगे (कबीर साहब) भोले किसान को ये मालूम नहीं कि हंस कोदरा खाते ही नहीं वे तो मोती चुगते हैं। तो ये नज़रिया (दृष्टिकोण) अनुभवी पुरुषों का और आम दुनिया का। अब आप एक कबीर साहब का शब्द- महापुरुषों की वाणियां तो बहुत हैं, यहां पर सारे महापुरुषों की वाणियां पेश (प्रस्तुत) की जाती हैं, कभी किसी की, कभी किसी की, कभी किसी की। क्यों कि बात सब एक ही कहते हैं। आज इस वक्त कबीर साहब का एक शब्द आ रहा है। गौर से सुनिये वह क्या फर्माते हैं:-

काया सराय में जीव मुसाफिर कहा करत उन्माद रे॥

कबीर साहब फर्माते हैं कि ये जिस्म रूपी एक काया है, ये सराय है सराय। हम इस में चंद रोजा (चार दिन के) मुसाफिर हैं। इस मकान में इंद्रियां लगी

पड़ी हैं- Outgoing faculties (जो बर्हिमुखी हैं) जिस से दुनिया के संस्कार इस में आ रहे हैं। और हम इंद्रियों के रसों-भोगों के इतने अधीन हो चुके हैं- अब संस्कार देखिये। आँख एक इंद्री है जिस से, हिसाबदानों ने हिसाब लगाया है कि 83 फी सदी संस्कार केवल आंखों के रास्ते अंतर में आते हैं। 14 फी सदी संस्कार कानों के रास्ते अन्तर में आते हैं और बाकी 3 फी सदी संस्कार बाकी दूसरी इंद्रियों के रास्ते अंतर में आते हैं। अब इंद्रियों के बाहरी जो संस्कार बैठे, जागते, सुनते, देखते अंतर में आते हैं, जब सो गए, आंख बंद की, वही चीज़ें ख्वाब (स्वप्न) में भी आती हैं। तो एक किस्म का superficial (ऊपरी, कृत्रिम) जीवन बन गया, अपने आप में कभी dip नहीं किया (अंतर में गोता नहीं लगाया अंतर को खोजा नहीं) तो कबीर साहब कहते हैं, ये काया रूपी सराय है जिस में तुम चंद रोजा (चार दिन के) मेहमान हो। तुम को जिस्म (शरीर, ये मानव तन) दिया गया है, किस लिए? कि तुम अपने आप को जानो और प्रभु को पहचानो। अगर इस में (मनुष्य जीवन में जो तुम को मिला है) तो फिर?

पौड़ी छुटकी फिर हाथ न आवे ऐहला जनम गंवाया।

एक बार मनुष्य जीवन की पौड़ी (सीढ़ी जो और ऊपर जाने के लिए मिली थी) हाथ से निकल गई तो ये जन्म बर्बाद चला गया। यही महात्मा बुद्ध ने कहा कि मनुष्य जीवन ही एक ऐसा जीवन है जिस में तुम इस हकीकत की तरफ जा सकते हो, बुद्ध को पा सकते हो। अगर ये काम नहीं किया, फिर या नसीब (कब भाग्य हों) कब मनुष्य जीवन तुम को मिले, फिर तुम ये काम कर सको। तो कबीर साहब ये कहते हैं कि काया रूपी सराय थी, तुम को रहने को मिली थी, तुम इस के, इंद्रियों के भोगों रसों में क्यों मस्त हो रहे हो? "कहा करत उन्माद रे।" क्यों मस्त हो रहे हो? आंखें देख-देख कर तमाशा रजती नहीं, भरती नहीं। कान सुन-सुन कर राग भरते नहीं। इंद्रियों के भोग-रस भोगते भोगते भोगते, माफ़ करना, हम तो समझते हैं हम भोग भोगते हैं,

भोग हम को भोग लेते हैं। पुराणों में एक गाथा आई है कि अन्न देवता ने विष्णु भगवान से शिकायत की कि महाराज, लोग मुझे बड़ा खाते हैं, मैं बड़ा तंग हूँ। तो कहने लगे (विष्णु भगवान) जो तुम को ज़रूरत से ज्यादा खाए तुम उसको खा जाना। बात समझे? भोगों में जितना लिवलीन (प्रवृत्त) होंगे- जायज (उचित) इस्तेमाल, संयम का इस्तेमाल करो। शास्त्रों ने इसी लिए मर्यादा रखी। मर्यादा रख कर करो फिर तो ये मददगार (सहायक) हैं। जैसे संखिया मिकदार (उचित मात्रा) में खाओ तो ताकत देने वाली चीज़ है। मिकदार से ज्यादा खाओ तो मार देता है। (जान से)। इंद्रियों के भोग-रस संयम के लिए मिले थे, इन से काम लेना था। ये चंद रोजा (चार दिन के लिए मिला हुआ) मकान मिला है। इस से हमने फायदा उठाना था। मगर हम इस को बर्बाद कर रहे हैं। अब बर्बाद ही कर रहे हैं ना।

देखिये एक इंद्री है आंख की- पांच इंद्रियां हैं, ज्ञान इंद्रियां। पांच कर्म इंद्रियों में वह काम कर रही है। अब देखिये एक एक इंद्री के गुलाम का क्या हशर होता है? पर्वाने को आंख की इंद्री बड़ी प्रबल है। वह जल कर मर जाता है। मछली को ज़बान की इंद्री बड़ी प्रबल है, चखने की। दरिया में आज़ाद फिरने वाली मछली का क्या हशर (परिणाम) होता है। जो माछी (मछली पकड़ने वाले) होते हैं ना, कुंडियां बना कर जाल लगा कर कुछ आटा या कुछ और चीज़ (खाने की) उसमें लगा देते हैं। वह (मछली) उसे हड़प कर जाती है (कुंडी में लगी खाने की चीज़ को) कुंडी गले में फंस जाती है। तड़प-तड़प कर मर जाती है। भंवरे को सूंघने की इंद्री बड़ी प्रबल है। फूलों में घुट कर मर जाता है। अरे भई तीन इंद्रियों के गुलाम का तो ये हशर है- मौत का घाट। अब दो रह गई- कान और स्पर्श। कान की इंद्री का क्या है? हिरण कितना तेज़ रफ्तार (गति वाला धावक) जानवर है। आप कभी जंगलों में गये हों या न गये हों, मुझे देखने का इत्तफ़ाक (संयोग) हुआ है। उलटी छलांग बीस-बीस गज की छलांग मारता है। कोई तेज रफ्तार घोड़ा भी उस को पकड़ नहीं

सकता। कैसे पकड़ते हैं? शिकारी लोग ढोल बजाते हैं। उस की (ढोल की) आवाज पर मोहित हो कर सिर रख देता है। सारी उम्र की गुलामी मोल लेता है। हाथी को स्पर्श की इंद्री बड़ी प्रबल है। कैसे पकड़ते हैं? जंगलों में हाथी को पकड़ नहीं सकते। बड़ा शहज़ोर (शक्तिशाली) जानवर है। सूंड से दरख्तों के दरख्त उखाड़ फेंक देता है। मुझे रहने का थोड़ा इत्तेफ़ाक़ हुआ है, चार-पांच महीने जंगलों में। शिकारी लोग बड़े बड़े गड्ढे खोद लेते हैं, ऊपर टहनियां लगा कर उस पर घास-फूंस डाल कर बिछा देते हैं ताकि मालूम न हो कि नीचे गड्ढा है। ऊपर हथनी की शक्ल बना देते हैं। वह (हाथी) स्पर्श के वेग से आ कर छलांग मारता है। गढ़े में गिर जाता है। कई दिन भूखा रख कर उसे निकालते हैं (गढ़े से) सारी उम्र अंकु श के नीचे रहता है। अरे भई पांच इंद्रियों में से एक एक (इंद्री) का गुलाम जो है वह मौत के घाट उतरता है या सारी उम्र की गुलामी मोल लेता है। अरे जिस को पांचों इंद्रियां प्रबल हों उस का क्या हशर होगा? आप बतायें। तो कहते हैं तुम क्यों मस्त फिर रहे हो? ये काया चंद रोज के लिये तुम को मिली थी। इस से फायदा उठाना था। तुम इंद्रियों के विषय-भोगों में फंस रहे हो, जीवन बर्बाद चला जा रहा है। आखिर ये (काया) तुम से हटा ली जाएगी, जिस्म (शरीर) छोड़ना पड़ेगा, ख्वाह (चाहे) तुम जानो न जानो (इस बात को कि तुम ने कब मरना है)। ये तो कोई बात नहीं। बड़े बड़े राजा महाराजा दुनिया में आए, बड़े बड़े आलिम-फाज़िल (विद्वान) भी आए, बड़े-बड़े फिलासाफर (दार्शनिक) भी आए, बड़े बड़े, माफ करना अनुभवी पुरुष भी आए, जो (लोग) कहते थे, भगवान का रूप हैं। आज उन का जिस्म कहां है? वह चले गये, और हम ने भी जाना है ना। No exception to the rule (ये नियम सब पर लागू है, किसी के लिये छूट नहीं)। अगर ये जिस्म चंद रोजा है, किस ने जाना है, कहां जाना है? अगर यही ख्याल सामने हो (हर वक्त) तो जीवन पलटा खा जाए कि नहीं? आज हमें नोटिस मिले कि कल तुम दिल्ली शहर खाली कर दो तो क्या करोगे

आज के दिन? सोचो। अरे इस के लिए तो कोई टाईम भी मुकर्र (निश्चित) हो या न हो, उस के लिये (जिस्म को छोड़ने के लिये) तो कोई टाईम भी मुकर्र नहीं। मुकर्र तो है, मगर हम को पता नहीं। क्या पता किस वक्त आ जाए (मौत)? इस लिए कबीर साहब ने कहाः-

सुकृत कर ले नाम सुमिर ले खबर नहीं कल की।

कल का क्या है, "खबर नहीं पल की" दमे वापसी है, आदमी। दम (स्वास) वापस आ गया तो इंसान, नहीं तो नहीं। आप ये जिस्म को देखते हो। जो इस को चलाने वाली शक्ति है उस को देखो (तब मालूम होगा ये जिस्म) मिट्टी का ढेर पड़ा है। ये वही मिट्टी का ढेर है जो हम लिए फिरते हैं।

तिच्चर बसे सहेलड़ी जिच्चर साथी नाल॥

जां साथी उठि चल्लेया तां धन खाकुराल॥

ये जिस्म की सहेली उस वक्त तक आबाद है जब तक इस का साथी इस के साथ है। "जां साथी उठि चल्लेया तां धन खाकुराल।" जब इस का साथी इस से जुदा होता है, मिट्टी को मिट्टी में मिला दिया जाता है। चार भाई उठा कर कहते हैं, ले चलो भई, देर हो रही है। "आध घड़ी कोऊ न राखत घर ते देत निकार।" अरे भई ये है नज़रिया (दृष्टिकोण) right understanding (सही-नज़री या सुमति) का। महापुरुष जब आते हैं, यही पेश करते हैं। कोई नई फिलासफ़ी नहीं। बड़ी साफगोई (स्पष्ट बात) है। आपने देखे हैं ना, ऐसे जिस्म कई बार। अपने कंधों पर उठाए हैं, श्मशान भूमि में पहुंचाए हैं। जिन्होंने मनुष्य जीवन पा कर अपनी आत्मा को मन-इंद्रियों से आज़ाद कर, अपने-आपको अनुभव कर, प्रभु अनुभव को पा लिया उन का आना-जाना खत्म हो गया, जो इंद्रियों के घाट से ऊपर आ गए, ये कहो। जो इंद्रियों के घाट पर ही रहे, नेक रहे या बद (दुष्ट) दोनों को आना-जाना पड़ेगा।

भगवान कृष्ण ने गीता में क्या कहा? कि दो ही मार्ग हैं, एक पित्रियान पंथ है, एक देवियान पंथ है। पित्रियान पंथ कर्मकांड का है। जो उस में रूह रहती है वह आती जाती है। जो रूह (आत्मा) देवियान पंथ या ज्योति मार्ग में जाती है वह फिर वापिस नहीं आती (उसका आवागमन खत्म हो जाता है)। सनातनी भाइयों में रिवाज है ना, जब अंत समय आता है तो कहते हैं, जल्दी करो, दीवा मनसाओ, नहीं तो बेगता मर जाएगा। जल्दी करो। अरे जीते-जी अंतर में ज्योति मार्ग अगर जारी हो जाए। (अर्थात् जीते-जी अंतर में ज्योति प्रगट हो जाए) तो आना-जाना तो खत्म हो जाए कि नहीं? ज्योति है कहां ? "दस इंद्रे जो राखे बास। ताके आत्मा होय प्रगास।" इंद्रियों से अतीत हो, ज्योति आगे ही मौजूद है। आपने पैदा नहीं करनी। It is already there सिर्फ inversion का सवाल है, अंतर्मुख होना कहो, इंद्रियों के घाट से ऊपर आना कहो, self-analysis करना (जड़ चेतन को अलैहदा करना) कहो, बात एक ही है। तो कबीर साहब कहते हैं, अरे भई ये काया रूपी सराय जिस में तुम रह रहे हो, क्यों इस पर मस्त हो रहे हो? ये चंद रोजा (चार दिन के लिये) रहने को मिली है बड़े भागों (भाग्य) से। ये golden opportunity (सुनहरी मौका) तुम को दी गई है। इस में तुम इंद्रियों के घाट से हटो। अब सवाल आता है, Common sense (मोटी बुद्धि) की बात है, जिस की आत्मा मन-इंद्रियों के घाट पर जिस्म का रूप बनी बैठी है, और साधन वे कौन से करते हैं? जिन का ताल्लुक (संबंध) इंद्रियों के घाट से है, वह इंद्रियों के घाट से ऊपर कैसे आ सकता है? कोई आ सके आए- Let him try and see (कर सको तो कर के देख लो)। अंधे को क्या चाहिए? दो आंखें। न आ सके तो किसी की मदद ले लो, उन की जो इस science (विद्या) को जानते हैं। वह दस को बिठायें, पचास को बिठाए, सौ को बिठाए, उन की तवज्जो के उभार से सब के अंतर में light आ जाती है। (ज्योति का विकास हो जाता है) धुनि (नाद, श्रुति) जारी हो जाती है। जब वह (दीक्षित) अपनी आंखों से देखता

है तो इक़रार करता (कबूलता) है कि हां ठीक है। तो संतों के मार्ग को उलटा मार्ग कहते हैं। वह क्या सिखलाते हैं। इंद्रियों को उलटना (बाहर से हटा कर अंतर्मुख करना)। How to invert (अंतर्मुख हम कैसे हो)? तो कहते हैं:-

सत्गुरु मिलिये उलटी भई भाई जीवित मरे तां बूझ पाए॥

जब रूह उलट गई (बाहर से अंतर्मुख सिमट गई)। जिस्म बेहिस (निश्चेत) हो गया, जैसे मरते समय होता है। और जो जीते-जी मर गया, उस का (आत्म-तत्व का) अनुभव करने वाला बन जाता है। Learn to die so that you may begin to live. (मरना सीखो ताकि तुम हमेशा की ज़िंदगी को पा जाओ)।

बमीर ऐ दोस्त पेश अज़ मर्ग अगर मी ज़िंदगी खाही।

मौलाना रूम साहब फरमाते हैं कि भाई अगर तुम हमेशा कि जिंदगी चाहते हो तो जीते-जी मरना सीखो।

दादू पहले मर रहो पाछे मरे सब कोय।

सब महापुरुष यही कहते हैं। जिस ने Mistery of life (जीवन रहस्य) को हल कर लिया उस को मरने का क्या ख़ौफ़ (भय) है।

मरिये तो मर जाइये फूट पड़े संसार॥

फिर क्या कहते हैं:-

ऐसी मरनी को मरे दिन में सौ-सौ बार॥

अपनी इच्छा से, at will (जब चाहो) rise above कर सको (पिंड से, स्थूल देह से ऊपर आ सको)। ऐसे पुरुषों को मौत का क्या खौफ (भय)? वो तो रोज मरते हैं। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि ऐ भाई ये जो मनुष्य जीवन का समय मिला, ये जिस्म एक सराय है जिस में चंद रोज तुम महमान हो। इस के इंद्रियों के भोगों-रसों में न पड़ो। मस्त न हो जाओ, अपने आप

को भूल न जाओ। जिस गर्ज के लिए मनुष्य जीवन तुम को मिला है, उस गर्ज को पाने का जत्न करो। ये पौड़ी (सीढ़ी) हाथ से निकल गई जन्म बर्बाद चला जाएगा। फिर कब मनुष्य जन्म आप को मिले, फिर ये काम आप कर सको।

रैन बसेरा कर ले डेरा चला सवेरे लाद रे।

कहते हैं ये रात का गुज़ारा है। दिन चढ़े जाना पड़ेगा। सराय में कौन रहता है? रात रह कर आगे चलो। ये हमेशा रहने का मुकाम नहीं। सब महापुरुषों ने यही कहा :-

धाम अपने चलो फाई पराये देस क्यों रहना।

काम अपना करो जाई पराये काम क्यों फंसना॥

ये धाम, ये देश तुम्हारा देश नहीं। जिस्म (मानव देह) के साथ चन्द रोजा ताल्लुक है। आखिर छोड़ना है। ये हमेशा रहने की जगह नहीं। जाना है ना। कहां जाना है? कभी ख्याल आया?

जो घर छड्ड गवावण सो लग्गा मन माहिं॥

जित्थे जाए तुध वरतणा तिस की चिंता नाहिं॥

जो घर एक दिन छोड़ जाना है, वह तो दीन-ईमान बन गया, उस के ताल्लुकात में फंस रहा है। "जित्थे जाय तुध बसणा तिस की चिंता नाहिं।" जहां आखिर जाना है उस का कभी कोई फिक्र किया है तुम ने? तुम को कौन अक्लमंद कहेगा? आमिल बनो, फाजिल बनो, ग्रंथाकार बनो, जिस ने जाने वाले को नहीं पहचाना, कहां जाना है उस की समझ नहीं, अरे भई, महापुरुष कहते हैं, वह या तो मूर्ख, या अंजान बच्चा है। दोनों में से एक जरूर है। और क्या कहें। तो अनुभवी पुरुषों के नज़दीक जाहिरी इल्म (बाहर की विद्या) रखने वाले क्या हैं? बिल्कुल अपढ़। इल्म देखो, अनुभवी पुरुष के गले में फूलों

का हार है। वह एक चीज़ को खोल खोल कर पेश कर सकता है। कई तरीके हैं समझाने के।

राम कृष्ण परमहंस के पास केशव चन्द्र सेन गए तो क्या कहा? कि देखो भई अगर एक बात से समझना है तो मेरे पास आओ। बहुत बातों से समझना है तो विवेकानन्द के पास जाओ। मतलब तो समझने से भई। देखिये, इंद्रियों को दमन करने से मन को खड़ा कर के, बुद्धि को स्थिर कर के फिर अनुभव को पाना है। जितना भी कोई इंद्रियों के घाट के फैलाव में है, ख्वाह वह इंद्रियों के भोगों रसों में है, या बुद्धि के फैलाव में है, उतनी देर काम नहीं बनेगा। बुद्धि से अब हम काम ले रहे हैं, समझने के लिए। लेकिन, reasoning is help and reasoning the bar (बुद्धि सहायक भी है और दीवार भी बन जाती है)। समझने के लिए, एक बात के नतीजे पर पहुंचने के लिए कि वह (प्रभु) है। जब है तो फिर उस को पाओ। फिर बुद्धि को थोड़ा खड़ा करो, उस को स्थिर करो। तो कहते हैं भई ये चंद रोज़ा मकान है। सराय में आते हो सुबह चले जाते हो। ये जिस्म छोड़ना पड़ेगा भई। सब ने छोड़ा तुम ने भी छोड़ना है। तेरे देखते देखतेः-

कित्थे गए तेरे मां पे जिन्नी तू जणयोई॥

ओह केहड़े पासे लद गए तू अजे न पतयोई॥

तेरे देखते देखते चले गए भई। तूने खुद कंधे पर उठाए, जा कर श्मशान भूमि में पहुंचाए, तुम्हें अब भी यकीन नहीं आता कि हम ने जाना है। अरे भई बात तो बड़ी साफ़ है, मगर दुनिया की चिकनाहट इतनी लग चुकी है कि, जैसे एक कपड़ा हो, उस पर चिकनाहट इतनी लगी हो, उस पर पानी कितना बहाओ, एक कतरा नहीं ठहरता है। ऐसे ही हमारे दिल-दिमाग़ में, हजार ग्रंथ-पोथियां पढ़ो, हज़ार लैक्चर सुनो, एक भी दिल में असर नहीं होता कि हम ने भी जाना है। जाना तो है ही भई। जाने या न जाने, जाना है। तो महापुरुष

हमेशा ये कहते हैं कि भई ये चंद रोज़ा ज़िंदगी है, ये एक बात समझ लो।

जिन्नी चल्लण जाणेया सो क्यों करे विथाह॥

जिन्होंने ये जान लिया, हम ने जाना है अरे भई वह इतने झूठ के पसारे क्यों करेगा। आज नोटिस मिले कि आज मरना है तो आज के दिन क्या करोगे? एक महात्मा ने कहा अरे हरेक दिन ऐसा गुज़ारो कि ये तुम्हारा आखिरी दिन है दुनिया में, it is your last day on earth, जीवन पलटा खा जाएगा। हम क्यों भूल में हैं? मौत याद नहीं हमें। मौत कोई हव्वा नहीं, तबदीली (परिवर्तन) का नाम है लेकिन इंतेकाल होना transfer होना, मुत्तकील हो जाना। ये कोई हव्वा नहीं। वही अकलमंद है, जो काम करना हो, मसलन शादी आ रही है महीने बाद, रात को भी जागेंगे, दिन को भी काम करेंगे, ताकि शादी का सामान तैयार हो जाए। और कोई काम करना हो उस के कितनी हम दिन रात जद्दोजहद (प्रयत्न) करते हैं? अरे भई जिस इम्तेहान के लिए या काम के लिए कोई वक्त मुकर्र है, उस के लिए हम कितने सियाने हैं। ऐसा इम्तेहान, great final change (आखिरी महान परिवर्तन), तब्दीली है ना मौत, ये भी एक इम्तेहान है। अरे जिस का कोई टाईम मुकर्र नहीं, उस के लिए हम क्या कर रहे हैं। देख लो। एक मौत को याद रख लो जिस से जीवन को पलटा दे सको। मनुष्य जन्म भागों से मिला है, क्या पता किस वक्त मौत आ जाए। जितना जल्दी हो सके, जिस गर्ज के लिए कोई चीज़ मिली है उस से फायदा उठा लो, नहीं तो फिर, "जहां आसा तहां वासा।" बस। अगर तुम मनुष्य जीवन पाकर, इंद्रियों के भोगो-रसों के ऊपर आ गए, rise above body-consciousness कर के अंतर में ज्योति का विकास हो जाए, आना-जाना खत्म हो जाए। झगड़ा पाक। अगर ये नसीब नहीं हुआ, कितने ही नेक बनो- "नेक कर्म और बुरे कर्म जीव को बांधने के लिए दोनों एक समान हैं जैसे सोने की बेड़ी और लोहे की बेड़ी (गीता)। "स्वर्ग नर्क फिर फिर औतार।" जो पित्रियान पंथ है उस में जो रूह रहेगी, आती-जाती रहेगी। ज्योति मार्ग

इंद्रियों के घाट के ऊपर चलता है। जो इस में आ जाए उस का आना-जाना खत्म हो जाता है।

अंतर में दो ही मार्ग हैं, ज्योति मार्ग और श्रुति मार्ग। ये कहां से शुरु होता है (इनका सिलसिला)? जब आप इंद्रियों के ऊपर आओ। Where the world's philosophies end there the religion starts जहां दुनिया के सारे फलसफ़े (दर्शन) खत्म हो जाते हैं वही इस की (ज्योति मार्ग और श्रुति मार्ग की) क, ख शुरू होती है। इस राज़ (रहस्य) से वाकिफ बहुत कम महात्मा आप को मिलेंगे। सामाजिक महात्मा रौ-रीत (रीति-रिवाज़) बतलाने वाले, अगर ये भी सही प्रचार करें तो भी लोगों को आपस में प्यार बने। परमात्मा से प्रेम करे। परमात्मा सब में है, सब से प्रेम करो। फिर झगड़े काहे के हैं भई? जब हम ने जान लिया सब के अंतर में वैसी ही आत्मा है जैसी हमारे अंतर में है, सब का जीवनाधार वही है जो हमारा है, फिर? हमें सब का अदब करना चाहिये कि नहीं? तुलसी साहब ने कहाः-

गुरु निवे जो सिख को साध कहावे सोए॥

कि जो गुरु शिष्य को नमस्कार करता है उस का नाम साधु है भई। गुरु की आंख तो खुली होनी चाहिए ना। वह तो देखता है वह प्रभु सब में है। वह सब को नमस्कार पहले करे। जिस बेचारे की आंख नहीं खुली वह न भी करे (नमस्कार) तो कोई बात नहीं। मगर क्या होता है? गुरु तो खड़ा रहता है अकड़ा हुआ। शिष्य मत्थे टेक टेक कर मर जाता है। तो अनुभवी पुरुषों की कहानी है। उस के बगैर कल्याण नहीं। सब समाजें उस की अपनी हैं, सब कौमें उस की अपनी हैं। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, ये रात का समय है, सराय में रहो, सुबह जाना होगा। क्या किया है आप ने? सोचो। आलिम बने, फाज़िल बने, ग्रंथकार बने, चातुर बने, सब कुछ बने जिस्म के लिहाज़ से भी तरक्की की, बुद्धि के लिहाज़ से भी की। और अपने आप के मुतल्लिक? We know little or nothing (हम ने कुछ भी नहीं जाना)। बताओ। आखिर

अपने आप के आधार पर ही ये चीज़ें चल रही हैं। आखिर ये जिस्म छोड़ना पड़ेगा। क्या हशर होगा? भुगतना पड़ेगा (कर्मों का फल) इस mystery (जीवन रहस्य) को हल नहीं किया। बड़े हमदर्द से हमदर्द इंसान भी- अव्वल तो दुनिया के लोगों की जब तक गर्ज़ें पूरी होती हैं तब तक सलाम-बंदगी करेंगे, चब गर्ज पूरी नहीं होगी तुम कौन हम कौन? बड़े सदाचारी भी हों अंत समय खड़े रहते हैं। ये धिड़क (दम तोड़) रहा है। "हे प्रभु इस पर दया कर।" कुछ नहीं कर सकते। उस वक्त मदद कौन कर सकता है? कोई अनुभवी पुरुष।

नानक कच्चड़ोयां संग तोड़ ढूंढ सज्जण संत पक्केयां॥
इह जीवंदे बिछड़ें ओह मोया न जासी संग छोड़॥

दुनिया के साथियों से ताल्लुक तोड़ लो। ये हमेशा नहीं साथ रहने वाले। ऐसा साथी ढूंढो जो हमेशा तुम्हारे साथ रहे। वह कौन है? कहते हैं संत जन। संत किसी भेख का नाम नहीं भई। जिस ने अनुभव को पाया है, जो mouth piece of God बना। (प्रभु का मुख बना, जिस में प्रभु बोलता है)। जो उस के पास जाते हैं, वह पहले दिन ही पिंड से ऊपर जाने का राज़ (भेद) उन को देता है, how to rise above body-consciousness, और कुछ experience (अनुभव) भी देता है और कहता है दिनों दिन बढ़ा लो (अभ्यास कर के)। दिन में सौ बार करने के काबिल हो जाओ, मौत का खौफ़ न रहे। मौत का खौफ हमें क्यों है ? दो कारण हैं। एक, हमें मरना नहीं आया। दूसरे, कहां जाना है, उस का पता नहीं। किसी अनुभवी पुरुष के पास बैठने से ये राज़ (रहस्य जीते-जी मरने का) मिल जाए- याद रखो अनुभवी पुरुष तुम को अपरा विद्या के साधनों में नहीं लगाता। वह कहता है जो किया है उस से फायदा उठाओ। जिस से तुम्हारा कल्याण है वह इंद्रियों के घाट से ऊपर है।

लगाओ सुरति अलख स्थान पर जाको रटत महेशा।

अपनी सुरति को वहां लगाओ जो इंद्रियों के घाट से ऊपर है। मिसाल

देते हैं, वहां शिव भगवान भी ताड़ी (दृष्टि) लगाए बैठे हैं। शिवनेत्र कहां बनाते हैं? माथे पर, इंद्रियों के घाट पर है, नेक है या बद, आना-जाना बना रहेगा। असल बात तो ये है कि ज़िंदगी खाने-पीने के लिए नहीं है। It is not to eat and drink, not to gratify passions (वह खाने पीने या वासना की तृप्ति के लिए नहीं मिली)। ज़िंदगी इस लिए मिली थी कि मनुष्य जीवन का पाना सफल हो । वह काम नहीं किया तो क्या किया। जन्म बर्बाद चला गया।

तन का चोला खरा अमोला लागा दाग़ पर दाग़ रे॥

कि मनुष्य जीवन का जीवन तुम को मिला था बड़ा अनमोल। चौरासी लाख जीयाजून (योनियों) की यह सरदार जून है। कुरान शरीफ़ में आता है कि इंसान का पुतला जब बनाया गया तो फरिश्तों को हुक्म दिया गया इस को सजदा करो। कहते हैं वह जीवन तुम को मिला है। इस को साफ़-सुथरा रखो। Body is the temple of God. ये हरि मंदिर है सच्चे मानों में।

एह शरीर हरि मंदिर है जिस में सच्चे की जोत॥

जिस में उस की ज्योति जगमगा रही है। बाहर मंदिरों को हम कितना साफ़ सुथरा रखते हैं? वह तो नमूना बनाया था ना, इस हरि मंदिर (शरीर) का गुंबददार शक्ल बना कर या Nose shaped (नाक की शक्ल के लबूंतर) गिरजे, या Forhead-shaped (माथे की मेहरबान की शक्ल की) मस्जिदें। उन को हम बड़ा साफ़ सुथरा रखते हैं। अरे भई असल हरि मंदिर है ये इंसानी जिस्म। इस को क्या किया है? बाहर से तो बड़ा साफ सुथरा रखते हैं। लाखों रूपये की टायलेट खर्च हो जाता है। अंतर की क्या हालत है? अंतर में गलाज़त (मैल) भरी हुई है इंद्रियों के भोगों-रसों की। अरे कुत्ता बैठता है वह ज़मीन को साफ करके दुम से बैठता है। मामूली भी इंसान ने आना हो तो हम कितनी सफाई करते हैं। हम चाहते हैं कि वह शहन्शाहों का शहन्शाह (परमात्मा) हमारे हृदय में प्रगट हो, कभी मैले हृदय में होगा? गुरु साहिबों की वाणी है, कहते हैं:-

अंदरों कसुद्दा कालियां बाहरों चिट मुंहियां।

अंदर तो काले सियाह हृदय हो रहे हैं- ईर्ष्या द्वेष, निंदा-चुगली, काम-क्रोध, रसों-भोगों से भरे पड़े हैं, गलाज़त से भरे पड़े हैं। "बाहरों चिट मुंहियां।" बाहर से बड़े साफ-सुथरे हैं।

रीसां करे तिन्हाडियां जो सेवन दर खड़ियां॥

अनुभवी पुरुषों की रीस (दिखावे की नकल) करते हैं, जो साफ सुथरे रहते हैं। Acting-posing (स्वांग रचना) का थोड़े सवाल है। गंदगी का ढेर लगा हो, उस पर आप रेशमी कपड़ा डाल दो। क्या खूशबू आएगी? बर्फ का ढेर हो, ऊपर काला कंबल डाल दो, फिर भी ठंडक आएगी। तो मनुष्य जीवन ही में हम ने उस को पाना था। इस को और दिनों-दिन दाग लगते चले जा रहे हैं। जो कपड़ा दबता जाए वह भी फिस जाता है। अरे भई जिस पर दाग लगते चले जाएं, वह मैल ही उस को खा जाती है। Ethical life is the steping stone to spirituality नेक-पाक सदाचारी जीवन प्रभु को पाने के लिए पहला जीना है। सब महापुरुषों ने यही कहा। यम-नियम के आसन इसी लिए बनाए गए हैं। Eight-fold Path of Budha (गौतम बुद्ध का अष्टमार्ग) इसी लिए बनाया गया है। जैनियों के चार व्रत इसी लिए बनाए गए। Sermon of the mount (इशु मसीह का पहाड़ी का उपदेश) इसी लिए था। सब महापुरुषों ने ये तालीम दी।

नानक नाम खुदाय का दिल हच्छे मुख लेहो॥

अबर दिवाजे दुनी के झूठे अमल करेहो॥

दिल को साफ रख कर प्रभु का नाम लो। मुंह में राम राम बगल में छुरी। दुनिया को दे दोगे। प्रभु को धोखा कैसे दोगे? दुनिया में भी, याद रखो, cat must be out of the bag. आखिर जाहिर हो जाता है (झूठ) कब तक छिपा रह सकता है? तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि मनुष्य जीवन का चोला बड़ा

अनमोल तुम को मिला था। इस को साफ रखना था। मगर इस पर तुम भोगों के रसों के दाग पर दाग़ दिन-रात लगा रहे हो।

दो दिन की ज़िंदगानी में क्या जले जगत की आग रे।

कहते हैं, दो दिन की जिंदगानी के लिए तू जगत की आग में जल रहा है। तृष्णा की आग में, इंद्रियों के भोगो-रसों में क्यों जीवन बर्बाद कर रहा है? आखिर छोड़ जाना था। जिंदगी किस लिए मिली थी ? Life is duty, life is love, life is holy gift of God जिंदगी प्रभु की दात (देन) है। यह सुरति है, प्रभु की अंश है। बड़ी कीमती चीज़ मिली थी, इस को (सुरति को) आज़ाद कर के उस से (प्रभु से) जुड़ने के लिए मिली थी। कर क्या रहे हो? परमात्मा प्रेम है। आत्मा उस की अंश है। ये भी प्रेम स्वरूप है। क्या बन रहा है? आगे बयान करेंगे।

क्रोध केंचुली उठी चित्त में भए मनुष से नाग रे।

क्रोध, ईर्ष्या-द्वेष, निन्दा चुगली दिल में बस रहे हैं। आत्मा की प्रेम का स्वरूप। परमात्मा प्रेम है God is love और जितने साधन हम करते हैं, अपराविद्या के, उन के करने का मतलब? भाव भक्ति बने, रुचि बने, शौक बने। बस। तो आत्मा का खासा (गुण) है कहीं न कहीं लग कर रहेगी, कहीं भी लगे। यह (आत्मा) हरेक जगह misfit हो रही है। ये जिस्म के साथ लग रही है, बाहरी ताल्लुकात में लंपट हो रही है। चेतन को अगर सुख हो सकता है तो चेतन के साथ लगने ही से हो सकता है। जड़-पदार्थो में भी उस को थोड़ा-बहुत सुख प्रतीत होता है, मगर वह उस का अपना आप सुख है, उस के साथ जुड़ने बैठने से है। जितनी देर जुड़ा रहता है उतनी देर तो रस प्रतीत होता है। जब वह चीज़ हट जाती है या यह उस से हट जाता है, फिर तवज्जो उखड़ती है, दुख होता है। अगर चेतन स्वरूप आत्मा महा चेतन प्रभु से जुड़ जाए, और इज़हार में आए, और चार्ज हो जाए। जैसे बाल बच्चों में, खाने पीने में सुख हम महसूस करते हैं थोड़ी तवज्जो जब तक बनी रहे जब उस में ज़रा

गड़बड़ हो तो रोता है। तो सुख किस में हुआ? अपने आप में। जहां सुख था वहां सरायत (प्रवेश) नहीं किया, बाहर सारी उम्र भटकते रहे। कभी उत्तर, कभी दक्षिण, कभी पूर्व कभी पश्चिम, हमारे हजूर (श्री हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज) फरमाया करते थे, जैसे जुलाहे की नली कभी इधर कभी उधर, कभी उधर। तीर्थ स्थानों के लिए हमारे दिल में इज्ज़त है। वहां कैसे बने तीर्थ? सवाल ये है। वह (तीर्थ) रूह अफ़जाई (आत्मा की सेहत) के लिए बनाए गए थे। पहाड़ तो सेहत अफ़जाई (स्वास्थ्योन्नति) के लिए, दुनिया के झंझटो से थोड़ी देर तुम बीमार हो, जल्दी चले जाओ पहाड़ो पर। काम छोड़ कर दो चार महीने रहे वहाँ, सेहत अच्छी हो गई। वहां ताज़ा हवा मिली, बेफिक्री का वक्त मिला, सेहत अच्छी हो गई। तीर्थ स्थान भी ख़ास गर्ज़ के लिए बनाए गए थे, रूह अफ़ज़ाई के लिये, दुनिया के झंझटों से थोड़ी देर के लिए आज़ाद हो कर, निश्चिंत और बेफिक्र हो कर वहां क्या करे? किसी अनुभवी पुरुष के चरणों में बैठे। इस लिए बनाए गए थे। बन क्या रहा है? हम ने तीर्थ स्थानों को भी आरामगाह (विश्राम गृह) और ऐशो इशरत (भोग-विलास) का सामान बना दिया।

मैं हरिद्वार गया। कई बार जाता हूं। वहां पर, हर की पौड़ी पर कई भाई इकट्ठे हुए कि सत्संग करो। मैंने कहा, भई ये जगह मुबारिक है। यहां बड़े-बड़े ऋषि मुनि, महात्मा आए। गुरु नानक साहब भी आए, गुरु अमरदास साहब भई 70 साल तक आते रहे। ये बड़ी मुबारिक जगह है, मगर हम ने क्या बना रखा है? स्टेशन से आओ, रस्ते में दो सिनेमा मिलते हैं। एक भाई उठ कर कहने लगे, नहीं महाराज, अब तीन हो गए हैं। बताओ तीर्थ स्थानों का क्या कसूर है? देखना तो यह था तीर्थ स्थान बने कैसे? वहां और लाखों आदमी आए, तीर्थ स्थान बना कैसे? वहां कोई अनुभवी पुरुष रहा भई। इशु-मसीह यूरोशलम में पैदा हुए, सारी दुनिया का वह तीर्थ है। और वहां लाखों पैदा हुए। तो तीर्थ की बड़ाई किस बात में हुई? अनुभवी पुरुष कर के। अनुभवी पुरुष की कीमत ज्यादा हुई कि कम? आप बतालाएं। ग्रंथों-पोथियों के पुजारी तो

हम बनेंगे, जिन के through (जिन के द्वारा) ये ग्रंथ आए, हम कह देते हैं, we don't want them. (हमें उन की ज़रूरत नहीं)। हम घरों को महात्माओं की फोटो से आरास्ता करेंगे (सजाएंगे) काग़ज़ी फूलों से आरायश (सजावट) करेंगे। अरे भई ज़िंदा महापुरुष की कद्र नहीं करते। क्या कहें। जीते-जी, ऐसे महापुरुष आते हैं तो हम उन्हें कुराहिया (पथभ्रष्ट) कहते हैं, कि इन की अक्ल ठिकाने नहीं। गुरु नानक साहब को, और और महात्माओं को ये कहा। अब कोई कद्र करता है दुनिया में? जब वह चले जाते हैं, जहां-जहां वह पांव रखते हैं उस जगह को पूजते हैं। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं भई ये चंदरोजा (देह) मिली है। आखिर जाना है। परमात्मा प्रेम था। आत्मा उस की अंश थी। ये भी प्रेम स्वरूप है। इंसान वही है जिस के अंतर में उंस हो, प्रेम हो। जिस के अंतर प्रेम नहीं वह इंसान कहां? कहते हैं इंसान को मुहब्बत का पुतला बनना था, इस ने प्रभु से प्रेम करना था। प्रभु सब में था, सब से प्रेम करना था। यह नाग बन गया। डसता है नाग तो आप को पता है क्या होता है? जहां डसता है वह जगह जलने लगती है। उस का डंक बड़ा सख्त होता है। ज़बान से जो डंक मारते हैं- अरे भई तलवार का ज़ख्म आठ दिन में, पंद्रह दिन में भर जाता है। ज़बान का ज़ख्म कभी नहीं भरता।

मैं West (पश्चिम) में गया। वहां वे लोग कहने लगे, How can we evade the dangers of an atomic war. कि हम ऐटम की जंग से बड़ा डर रहे हैं, कैसे इस से बच सकते हैं? मैंने कहा, only if you live upto what your scriptures say कि जो तुम्हारी धर्म पुस्तकें कहती हैं उस के आमिल बनो (उस को जीवन में धारण करो), ऐटम की लड़ाई नहीं होगी। धर्म पुस्तकें हमें क्या कहती हैं? प्रभु से प्यार करो, प्रभु सब में हैं, सब से प्यार करो।

*